सत्रीय परीक्षा - 2
प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22
विषय - हिंदी (ऐच्छिक)
विषय कोड - 002
कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे पूर्णांक : 40

सामान्य निर्देश :-

- निम्ननिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए ।
- इस प्रश्न पत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्न पत्र में कुल 09 प्रश्न पूछे गए हैं तथा यह 2 खंडों में विभाजित है।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

खंड - क

प्रश्न 1 निम्नलिखित दिए गए 3 शीर्षकों में से किसी 1 शीर्षक पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए। (5 अंक)

(क) बारिश की वह सुबह
(ख) मेरे बगीचे में खिला गुलाब
(ग) विद्यालय में मेरा प्रिय कोना

प्रश्न 2 आप अपने विद्यालय के खेल कप्तान हैं। टोक्यो ओलंपिक और पैरा ओलंपिक में भारतीय प्रदर्शन से अति उत्साहित हैं। खेलों के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए अपने विचार व्यक्त करते हुए लगभग 120 शब्दों में किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। (5 अंक)

अथवा

आप निवासी कल्याण संघ (रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन) के अध्यक्ष मुकेश बदरप्पा हैं।नगर विकास प्राधिकरण के सचिव को अपने क्षेत्र के पार्क के समुचित विकास के लिए लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50 शब्दों में लिखिए। (5 अंक)

(क) कहानी में पात्रों के चरित्र-चित्रण का क्या स्थान होता है ? (3×1=3)

अथवा

नाटक क्या होता है? यह कहानी से किस प्रकार भिन्न है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख)समय का बंधन सभी के लिए आवश्यक है। नाटक लिखने के लिए 'समय के बंधन' का औचित्य स्थापित कीजिए।   (2×1=2)

अथवा

कहानी का कथानक क्या होता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50 शब्दों में लिखिए। (5 अंक)

(क) माना जाता है कि पत्रकारिता जल्दी में लिखा गया साहित्य है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? इस संदर्भ में अपने विचार तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कीजिए। (3×1=3)

अथवा

पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना पहचाना रूप समाचार लेखन है। समाचार को कैसे लिखा जाता है?

(ख) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए। (2×1=2)

अथवा

स्तंभ लेखन क्या है? स्पष्ट कीजिए।

खंड **-** ख **(** पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक**)**

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। (2 × 3 =6 अंक)

(क) निम्नलिखित पंक्तियों में निहित काव्य सौंदर्य लिखिए।

पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।
नीरज नयन नेह जल बाढ़े।।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा।
एहि ते अधिक कहौं मैं काहा।।

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए -

जनम अबधि हम रूप निहारल नयन न तिलपित भेल।।
सेहो मधुर बोल स्रवनहि सूनल स्रुति पथ परस न गेल।।

(ग) बारहमासा का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 6 निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (1×2 =2 अंक)

(क) अपने द्वारा इस सत्र में पढ़ी किन्हीं दो कविताओं में प्रयुक्त अलंकारों के महत्व का वर्णन कीजिए।

(ख) वियोगावस्था में सुख देने वाली वस्तुएँ भी दुख देने लगती हैं। 'गीतावली' से संकलित पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए।

प्रश्न 7 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। (2 × 3 =6 अंक)

(क) 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ के लिए कोई दूसरा शीर्षक लिखें तथा इसे चुनने के लिए अपने तर्क दें ।

(ख) असगर वजाहत द्वारा लिखी लघुकथाओं में से कौन-सी लघुकथा आपको सर्वाधिक प्रभावित करती है और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

(ग) पारो और संभव में से आप किसके प्रति अधिक सहानुभूति रखते हैं और क्यों? 'दूसरा देवदास' पाठ के आधार पर उस पात्र की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 8 निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (1×2 =2 अंक)

(क) "व्यापार यहाँ भी था।" - 'दूसरा देवदास' पाठ के आधार पर इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) औद्योगीकरण ने पर्यावरण को कैसे प्रभावित किया है ? "जहाँ कोई वापसी नहीं" पाठ के आधार पर बताइए।

प्रश्न 9 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2 × 2 =4अंक)

(क) लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है?

(ख) 'छप्पन के काल ने देशभर में हाय-हाय मचाई हो लेकिन मालवा में लोग न प्यासे मरे न भूखे क्योंकि उसके पहले के साल खूब पानी था और बाद के साल में भी अपने नदी, नाले, तालाब सँभाल के रखो तो दुष्काल का साल मजे में निकल जाता है। लेकिन हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है।'

लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है। आप क्या मानते हैं? कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(ग) शरद में ही हरसिंगार फूलता है। पितर-पक्ख (पितृपक्ष) में मालिन दाई घर के दरवाजे पर हरसिंगार की राशि रख जाती थीं रख जाती थीं, तो खड़ी बोली हुई। गाँव की बोली में 'कुरइ जात रहीं।' बहुत ढेर सारे फूल मानो इकट्ठे ही अनायास उनसे गिर पड़ते थे। 'कुरइ देना' है तो सकर्मक लेकिन सहजता अकर्मक की है।

उपर्युक्त पंक्तियाँ किसकी आत्मकथा का वर्णन कर रही हैं और इस कथा के केंद्र में क्या है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सत्रीय परीक्षा **- 2**
प्रतिदर्श प्रश्नपत्र **2021-22**
विषय **-** हिंदी **(**ऐच्छिक**)**
विषय कोड **- 002**
कक्षा **-** बारहवीं

अंक योजना

निर्धारित समय **: 2** घंटे   पूर्णांक **: 40**

सामान्य निर्देश :-

-अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं ।यह सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं ।
-यदि परीक्षार्थी इन संकेत बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ। -मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार अनुसार ही किया जाए।

प्रश्न 1 किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। (5×1 =5अंक)

भूमिका - 1 अंक
विषयवस्तु - 3 अंक
भाषा - 1 अंक

प्रश्न 2 दो में से किसी एक विषय पर पत्र(शब्द सीमा लगभग 120 शब्द) (5×1 =5अंक)

आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ- 1अंक

विषय वस्तु - 3 अंक

भाषा - 1 अंक

प्रश्न 3 (शब्द सीमा लगभग 50 शब्द)
(3×1 =3) + (2×1 =2)

(क) कहानी में पात्रों के चरित्र-चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पात्रों का चरित्र चित्रण करके ही कहानीकार कहानी को आगे बढ़ाता है। हर पात्र का अपना स्वभाव होता है। पात्रों का चरित्र चित्रण पात्रों की अभिरुचियों के माध्यम से भी होता है। समाज में अलग-अलग प्रकार के लोगों की अपने स्वभाव के अनुसार अलग-अलग अभिरुचियाँ होती हैं, इन्हें ध्यान में रखकर ही कहानीकार पात्रों का चरित्र चित्रण करता है।
चरित्र चित्रण का सरल तरीका यह है कि लेखक पात्रों की विशेषताओं का बखान स्वयं करता है। जैसे- श्री अनंत राम शर्मा बहुत परोपकारी व धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इलाके के सभी लोग उनका सम्मान करते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पात्रों के काम के द्वारा भी उनका चरित्र चित्रण स्वयं ही हो जाता है। उनके स्वभाव और स्वरूप का वर्णन किया जाता है।दूसरे पात्र के माध्यम से भी कई बार कहानीकार किसी अन्य पात्र का चरित्र-चित्रण करवाता है। (3 अंक)

अथवा

नाटक हिंदी साहित्य की एक विधा है। यह लिखित रूप से दृश्यता की ओर जाता है। जब नाटक का मंचन होता है तब जाकर उसमें संपूर्णता आती है। नाटक को तीन या उससे अधिक अंकों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक अंक दृश्यों में विभाजित होता है। नाटक में पात्रों का चरित्र चित्रण सजीव रूप से किया जाता है।

नाटक और कहानी में अंतर

- कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ा हुआ होता है और नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, पात्र, श्रोता, दर्शक तथा अन्य अनेक लोगों से जुड़ता है।

-कहानी को पढ़ा या सुना जा सकता है जबकि नाटक को देखा जाता है। इसे मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। नाटक में मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, अभिनय, संगीत आदि का समावेश होता है। (3 अंक)

(ख) 'समय का बंधन' नाटक की रचना प्रक्रिया पर पूरा प्रभाव डालता है। इसीलिए यह निश्चित किया जाता है कि नाटक निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा होना चाहिए। नाटक को वर्तमान काल में ही संयोजित करना होता है भले ही वह भूतकाल या भविष्यकाल की रचनाओं पर आधारित हों। काल चाहे कोई भी हो उसे एक विशेष समय में, एक विशेष स्थान पर वर्तमान काल में ही घटित होना होता है। साहित्य की अन्य विधाओं, कहानी, उपन्यास या कविता को पढ़ते या सुनते हुए हम बीच में रूक सकते हैं और कुछ समय बाद वहीं से शुरू कर सकते हैं परंतु नाटक के साथ ऐसा करना संभव नहीं है नाटककार को इस बात का ध्यान भी रखना होता है कि दर्शक कितनी देर तक किसी घटना को घटित होते हुए देख सकते हैं। नाटककार से अपेक्षा की जाती है कि नाटक के प्रत्येक अंक की अवधि कम से कम 48 मिनट की हो यही समय का बंधन कहलाता है। (2 अंक)

अथवा

कहानी का केंद्रीय बिंदु उसका कथानक होता है कथानक कहानी का वह संक्षिप्त रूप होता है जिसमें प्रारंभ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का समावेश किया जाता है कहानी और कथानक में थोड़ा अंतर होता है उदाहरण के लिए प्रेमचंद की कहानी 'कफ़न' 10-12 पृष्ठों की कहानी है, पर इसका कथानक 10-12 पंक्तियों में लिखा जा सकता है।
इस आधार पर जा सकता है कि कथानक (Plot) कहानी का प्रारंभिक नक्शा होता है। यह लगभग उसी प्रकार का होता है जैसे किसी मकान को बनाने से पहले उसका नक्शा बनाया जाता है। कभी-कभी कहानीकार के हाथ में कथानक एक सूत्र आ जाता है, फिर यह उसे विस्तार देने में जुट जाता है। यह विस्तार कल्पना के आधार पर भी किया जा सकता है। प्रायः कथानक में प्रारंभ मध्य और अंत-कथानक का पूरा स्वरूप होता है। कथानक में इस के तत्त्व भी रहते हैं। इनसे कहानी रोचक बनी रहती है। कथानक की पूर्णता की शर्त भी यही होती है कि कहानी नाटकीय ढंग से अपने उद्देश्य को पूरा करने के बाद समाप्त हो। (2 अंक)

प्रश्न 4 (शब्द सीमा लगभग 50 शब्द)
(3×1 =3) + (2×1 =2)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) ऐसा माना जाता है कि पत्रकारिता जल्दी में लिखा गया साहित्य है परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। पत्रकारिता और साहित्य लेखन में अंतर है। पत्रकारीय लेखन अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखकर लिखा जाने वाला लेखन है। इसके विपरीत साहित्यिक रचनात्मक लेखन में लेखक को काफ़ी छूट होती है। कविता, कहानी, उपन्यास साहित्यिक लेखन है।पत्रकारीय लेखन में अलंकारिक-संस्कृतनिष्ठ भाषा-शैली के बजाय आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाता है। पत्रकारीय लेखन की भाषा सरल, सहज और रोचक होती है।

अथवा

पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-पहचाना रूप समाचार लेखन है। आमतौर पर अखबारों में समाचार पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार लिखते हैं, जिन्हें संवाददाता या रिपोर्टर कहते हैं।

अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। समाचार लेखन की शैली को उलटा पिरामिड शैली के नाम से जाना जाता है। यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ में कम महत्वपूर्ण सूचना तथा तथ्य दिए जाते हैं। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

(ख) संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं । बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है। एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं।

लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य यह है कि आप सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें।

अथवा

विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है - स्तंभ लेखन। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं । उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है।ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है।

प्रश्न 5 (शब्द सीमा लगभग 60 शब्द) (2×3=6)

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर

(क) भाव-सौंदर्य - इस चौपाई में तुलसीदास जी ने भरत की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है जब वह मुनि वसिष्ट के अनुरोध पर अपने मन की बात कहने के लिए श्री राम के सामने खड़े होते हैं तो उनका शरीर पुलकित हो जाता है। इससे भरत की भावुकता का ज्ञान होता है। उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है।उनके मुँह से बोल निकलने बड़े कठिन प्रतीत हो रहे हैं, फिर भी वे बोलते हैं कि मैं इससे अधिक क्या कह सकता हूँ। मुनि वसिष्ट ने पहले से ही कह दिया है श्री राम के स्नेह और प्रेम के कारण वे भावविभोर हो जाते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

शिल्प सौंदर्य -

- 'नीरज नयन नेह' और 'मोर मुनिनाथ' में अनुप्रास अलंकार है।

-'नीरज नयन', 'नेह जल' में रूपक अलंकार है।

-अवधी भाषा का प्रयोग है।

-चौपाई छंद है। (3 अंक)

(ख) इन पंक्तियों में विद्यापति प्रेम में अतृप्ति के बारे में बताते हैं। सखी द्वारा प्रेम का अनुभव पूछने पर नायिका सखी को बताती है-मैं जन्म-जन्मांतर से अपने प्रियतम का रूप निहारती चली आ रही हूँ परंतु अभी भी मेरे नेत्र तृप्त नहीं हुए हैं । प्रियतम के मधुर बोल मेरे कानों में गूँजते रहते हैं फिर भी ऐसा लगता है कि मैंने उन्हें कभी सुना ही न हो। रूप और वाणी की चिर नवीनता मुझे अतृप्त बनाए रखती है। निष्कर्ष यह है कि सच्चे प्रेम में अतृप्ति बनी रहती है। (3 अंक)

(ग) मलिक मुहम्मद जायसी की काव्य रचना 'पद्मावत' से बारहमासा के अंश में नायिका पर अगहन मास और फागुन मास के प्रभाव का वर्णन है। इन मासों में नागमती की विरह दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है। अगहन में नायिका नागमती विरहाग्नि में जलती है तथा भँवरे और काग के समक्ष अपनी दशा का उल्लेख करती है। पूस मास में नायिका शीत के कारण काँपती प्रतीत होती है। शीत उसके शरीर को कँपाता है तो विरह उसके हृदय को। इसमें चकई और कोकिला से नायिका के विरह की तुलना की गई है। नायिका विरह में शंख के समान हो गई है। माघ महीने में जाड़े से हुई नागमती की विरह-दशा का मार्मिक वर्णन है। वर्षा का होना तथा पवन का बढ़ना नायिका के विरह को बढ़ा हता है। फागुन मास में चलने वाले पवन झकोरे शीत को चौगुना बढ़ा रहे हैं। सभी फाग खेलने में मस्त हैं पर नायिका विरह-ताप के कारण संतप्त है। (3 अंक)

प्रश्न 6 (शब्द सीमा लगभग 30-40 शब्द) (1×2 =2)

(क) छात्र-छात्राओं द्वारा किन्हीं दो कविताओं में प्रयुक्त विभिन्न अलंकारों का वर्णन किए जाने पर तथा महत्व दर्शाने पर अंक प्रदान करें। (2 अंक)

(ख) सुखकाल में सुखदायी प्रतीत होने वाली वस्तुएँ भी वियोगावस्था में दुख का कारण बन जाती हैं। इसका कारण यह है कि हम उन चीजों को देखकर उनसे जुड़ी सुखद स्मृतियों में खो जाते हैं। उनसे जुड़े व्यक्तियों का स्मरण हो जाता है। यह बात श्रृंगार तथा वात्सल्य दोनों अवस्थाओं में उत्पन्न होती है। माता कौशल्या भी अपने पुत्र राम से संबंधित वस्तुओं को देखकर भाव विह्वल हो जाती हैं। वह राम के शीघ्र लौटने की कामना करने लगती हैं। (2 अंक)

प्रश्न 7 (शब्द सीमा लगभग 50-60 शब्द) (3×2 =6)

(क) 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ यात्रा-वृतांत शैली में रचित है। जहाँ अमझर गाँव के पर्यावरण विनाश का वर्णन किया गया है।छात्र-छात्राएँ 'जहाँ कोई वापसी नहीं' शीर्षक के स्थान पर कोई अन्य शीर्षक जैसे 'क्या वे दिन लौट

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

आएँगे', 'पुरानी वापसी' इत्यादि का चयन कर सकते हैं। तर्क सहित उपयुक्त शीर्षक देने पर अंक प्रदान करें। (3 अंक)

(ख) छात्र-छात्राएँ 'शेर', 'पहचान', 'चार हाथ' और 'साझा', असगर वजाहत द्वारा लिखी लघु कथाओं में से जिसे सर्वाधिक प्रभावी मानते हैं उसके विषय में बताते हुए कारण सहित अपने विचार स्पष्ट करेंगे।

शेर लघुकथा में शेर को सत्ता की व्यवस्था का प्रतीक बताया गया है। यह सत्ता तभी खामोश रहती है जब तक सब उसकी आज्ञा का पालन करते रहें।

'पहचान' लघु कथा में राजा को बहरी, गूँगी और अंधी प्रजा पसंद आती है जो बिना कुछ बोले और देखें आज्ञा का पालन करती है।

'चार हाथ' कथा पूँजीवादी व्यवस्था में मज़दूरों के शोषण को उजागर करती है।

'साझा' में उद्योगों पर कब्ज़ा जमाने के बाद पूँजीपतियों की नज़र किसानों की ज़मीन और उत्पाद पर होने की दशा को दर्शाया गया है। (3 अंक)

(ग) छात्र-छात्राएँ 'दूसरा देवदास' कहानी के मुख्य पात्र पारो और संभव में से किसी एक पात्र के प्रति अपनी सहानुभूति दर्शाते हुए उनकी मनःस्थिति का वर्णन करेंगे। (3 अंक)

प्रश्न 8 किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (1×2 =2 अंक)

(क) " व्यापार यहाँ भी था। " के माध्यम से 'दूसरा देवदास' कहानी में हरिद्वार के पूरे क्षेत्र में अनेक लोगों की व्यापारिक गतिविधियों के विषय में बताया गया है। बाहर तो व्यापार चल ही रहा था, मंसा देवी के मंदिर के अंदर भी व्यापारिक गतिविधियाँ चल रही थीं।मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए लाल-पीले धागे बिक रहे थे... (2 अंक)

(ख) औद्योगीकरण ने पर्यावरण को पूरी तरह से प्रभावित किया है। 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ में लेखक ने इस बात को पूरी तरह से स्पष्ट किया है। औद्योगीकरण के लिए लोगों की ज़मीन अधिग्रहित की गई, उन्हें उजाड़ा गया। वहाँ के परिवेश को नष्ट कर दिया गया जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया। नए उद्योगों के स्थापित होने से तथा उनसे निकलने वाले कचरे व अन्य पदार्थों के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है तथा खतरा उत्पन्न हो रहा है। (2 अंक)

प्रश्न 9 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2 × 2 =4अंक)

(क) लेखक बिसनाथ ने माँ और बत्तख को ममता के आधार पर समान दिखाया है। बत्तख अंडा देने के समय पानी को छोड़कर ज़मीन पर आ जाती है। बत्तखें अपने अंडों को सेती हैं। वे अपने पंख फुलाए उन्हें दुनिया की नज़रों से छुपा कर रखती हैं। बत्तख बहुत कोमलता एवं सतर्कता से कार्य करती है।
इसी प्रकार माँ भी अपने बच्चे की देखभाल करती है। माँ भी बत्तख की तरह अपने बच्चों को अपने आँचल की छाया में छिपाकर रखती हैं। दोनों को अपने बच्चों के साथ लगाव होता है इसीलिए दोनों की तुलना लेखक विश्वनाथ ने की है। (2 अंक)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) लेखक मालवा का उदाहरण देते हुए औद्योगिक विकास को उजाड़ की अपसभ्यता मान रहे हैं। लेखक को लगता है कि हम एक गलतफ़हमी के शिकार हैं। यह वास्तव में विकास ना होकर हमें उजाड़ की ओर ले जा रही है। यह अपसभ्यता है। पाश्चात्य दृष्टिकोण से अपनाई जा रही सभ्यता हमें उजाड़कर मानव जाति और प्रकृति दोनों का विनाश करने पर तुली है। इस सभ्यता ने पर्यावरण असंतुलन पैदा कर दिया है और मौसम चक्र को बिगाड़ दिया है।(2 अंक)

(ग) शरद में ही हरसिंगार फूलता है। पितर-पक्ख (पितृपक्ष) में मालिन दाई घर के दरवाजे पर हरसिंगार की राशि रख जाती थीं रख जाती थीं, तो खड़ी बोली हुई। गाँव की बोली में 'कुरइ जात रहीं।' बहुत ढेर सारे फूल मानो इकट्ठे ही अनायास उनसे गिर पड़ते थे। 'कुरइ देना' है तो सकर्मक लेकिन सहजता अकर्मक की है।

शरद में हारसिंगार का खिलना, गाँव की बोली व अन्य वनस्पतियों का वर्णन लेखक विश्वनाथ द्वारा अपनी आत्मकथा बिस्कोहर की माटी के माध्यम से किया गया है। इस पूरी कथा के केंद्र में है - बिस्कोहर , जो लेखक का गाँव है और एक पात्र बिसनाथ जो स्वयं लेखक विश्वनाथ हैं। गर्मी, वर्षा एवं शरद ऋतु में गाँव में होने वाली परेशानियों का वर्णन भी लेखक ने किया है। पूरी रचना में लेखक ने अपने अनुभव और देखे गए प्राकृतिक सौंदर्य को प्रस्तुत किया है। (2 अंक)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in